आनन्द कुमार त्रिपाठी
सहायक प्रोफेसर (इतिहास)
रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम

बी० ए० (प्रतिष्ठा - इतिहास) तृतीय वर्ष
प्रश्नपत्र - VI

" भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का उदय एवं विकास "

भारत का राष्ट्रीय आंदोलन लंबे समय तक संचालित एक प्रमुख आन्दोलन था। इस आन्दोलन की औपचारिक शुरुआत 1885 ई० में कांग्रेस की स्थापना के साथ हुई, जो कुछ उतार - चढ़ावों के साथ 15 अगस्त 1947 तक अनवरत रूप से जारी रहा। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को तीन भागों में बांटा जा सकता है -

प्रथम चरण (1885 - 1905 ई० तक) - इस काल में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। पर लक्ष्य अस्पष्ट था। उस समय इस आन्दोलन का प्रतिनिधित्व अल्प शिक्षित, बुद्धजीवी मध्यम वर्गीय लोग कर रहे थे। यह वर्ग पश्चिम की उदारवादी एवं अतिवादी विचारधारा से प्रभावित था।

द्वितीय चरण (1905 से 1919 ई० तक) - इस समय तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस काफी परिपक्व हो चुकी थी तथा इसके लक्ष्य एवं उद्देश्य स्पष्ट हो चुके थे। राष्ट्रीय कांग्रेस के इस मंच से भारतीय जनता के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास के प्रयास शुरू किये गये। इस दौरान कुछ उग्रवादी विचारधारा वाले संगठनों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को समाप्त करने के लिए पश्चिम के ही क्रांतिकारी ढंग का प्रयोग भी किया।

तृतीय एवं अन्तिम चरण (1919 से 1947 ई० तक) - इस काल में महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिए आंदोलन किया।

Scanned with CamScanner

भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में सहायक तत्व –

1857 का वर्ष राष्ट्रवाद के उदय का प्रारम्भ माना जाता है, इसके उदय के लिए निम्नलिखित कारण जिम्मेदार हैं:–

1. पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति ने राष्ट्रवादी भावना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह किया। अंग्रेजों ने भारतीयों को इसलिए शिक्षित नहीं किया था कि उनमें राष्ट्रीयता की भावना जागे बल्कि उनका उद्देश्य तो ब्रिटिश प्रशासन एवं व्यापारिक फर्मों के लिए क्लर्क की आवश्यकता की पूर्ति करना था। भारतीयों ने पाश्चात्य विद्वानों को सुनकर तर्क एवं बुद्धिवाद के साथ राष्ट्रवादी भावना को जगाना प्रारम्भ किया।

2. समाचार-पत्रों एवं प्रेस का राष्ट्रवाद के उदय में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत में राजाराममोहन राय ने संवाद कौमुदी (बंगला में) एवं मिरातुल अखबार (फारसी में) के द्वारा राष्ट्रीय प्रेस की नींव डाली। कालान्तर में सोमप्रकाश, बंगदूत, अमृतबाजार पत्रिका, केसरी, हिन्दू, पायनियर, मराठा, इण्डियन मिरर आदि राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई।

3. राष्ट्रीय साहित्य भी राष्ट्रवादी भावना की उत्पत्ति के लिए जिम्मेदार है।

4. आर्थिक शोषण का भी राष्ट्रवाद को जगाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जैसे - दादा भाई नौरोजी ने 'धन निष्कासन के सिद्धान्त' को समझाकर, अंग्रेजों की शोषणकारी व्यवस्था का भेद उजागर किया।

5. अंग्रेजों की राजनीतिक एकीकरण की नीति ने भी परोक्ष रूप से भारतीयों में राष्ट्रवाद की अलख को जगाया।

6. तीव्र परिवहन एवं संचार साधनों में रेल, डाक व तार आदि ने भी भारत में राष्ट्रवाद को मजबूत किया।

7. बौद्धिक पुनर्जागरण ने राष्ट्रवाद के उदय में अहम भूमिका निभायी।

Scanned with CamScanner